

## प्रेस विज्ञप्ति

**वेटरनरी विश्वविद्यालय की गोष्ठी में पहुंचे 432 पशुपालक**  
देशी गौवंश और वृक्षारोपण से गांवों में खुशहाली आएगी : वन राज्यमंत्री रिणवां



बीकानेर, 7 अगस्त। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा रविवार को लाछड़सर (रतनगढ़) गांव में कृषक-पशुपालक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में 432 कृषक-पशुपालकों ने

उन्नत पशुपालन और पशुचिकित्सा तकनीकों की वैज्ञानिक जानकारी विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त की। खनिज, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री राजकुमार रिणवां ने दीप प्रज्वलित कर गोष्ठी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री श्री रिणवां ने कहा कि हमारी संस्कृति में पशुओं के विभिन्न अवतार

रूप में पूजा की जाती है। पशु हमारे मित्र हैं जो मुश्किल समय व जलवायु परिस्थितियों में हमारे जीवन का सम्बल बने हैं। देशी नस्ल के गौधन में अच्छे उत्पादन और अनुकूलन की क्षमता है। ब्राजील और अन्य विदेशों में भी स्थानीय नस्लों का महत्व बढ़ा है। संकर नस्लें ज्यादा उपयोगी नहीं हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने देशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास के उल्लेखनीय कार्य किए हैं। वन राज्य मंत्री ने कहा कि गांवों में स्थित गोचर व ओरण हमारे पशुओं के प्रमुख चारागाह हैं। रतनगढ़, छापर और राजलदेसर के दो-दो ब्लॉक्स में गोचर-ओरण में सघन वृक्षारोपण करवाया जाएगा। इसमें एक स्वयंसेवी संगठन ने जिम्मा उठाया है। गांवों के ओरण व गोचर में भी सघन वृक्षारोपण कार्य किया जाना चाहिए। वृक्षारोपण हमारी सभी जरूरतों के लिए बहुत जरूरी है।

वन राज्यमंत्री श्री रिणवां ने कहा कि रतनगढ़ में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र बनने से क्षेत्र के पशुपालकों और कृषकों को नई पशुपालन तकनीक सीखने का अवसर मिलेगा। इसके लिए भूमि चिन्हित की गई है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए



# जन सम्पर्क प्रकोष्ठ

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

Phone: 0151-2543419 (O) 2549348 (Fax) E-mail: prcrajuvas@gmail.com



वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने कहा कि नए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र शुरू होने से क्षेत्र के कृषकों और पशुपालकों को पशुपालन की नवीन तकनीक और उन्नत पशु पालन में पारंगत करके पशुओं को अधिक उत्पादक और उपयोगी बनाया जा सकेगा। लाछड़सर एक प्रगतिशील पशुपालक गांव है जहां शीघ्र ही विश्वविद्यालय द्वारा एक पशु बांझपन निवारण चिकित्सा शिविर लगाकर पशुपालकों को लाभान्वित किया जाएगा।

संगोष्ठी के प्रभारी एवं प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर. के. धूड़िया ने स्वागत भाषण दिया और विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी डॉ. राजेश सिंघाठिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। एक दिवसीय गोष्ठी में पशुपालन विभाग, चूरू क्षेत्र के संयुक्त निदेशक डॉ. राजेन्द्र तमोली ने राज्य के पशुपालन विभाग की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए पशुपालकों को इससे लाभ उठाने का आह्वान किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों में डॉ. दिनेश जैन ने उन्नत पशुपोषण, डॉ. प्रमोद धतरवाल ने प्रजनन रोगों, डॉ. सुनील तमोली ने पशुरोगों और दिनेश आचार्य ने चारा फसलों की खेती के विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि ने प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित “पशुपालन नए आयाम” के मासिक ताजा अंक का विमोचन किया। अतिथियों ने गोष्ठी में आए श्री कृष्ण गौशाला अध्यक्ष श्री दीपाराम पारीक, अर्जुनसिंह, कुन्दनसिंह, भैराराम व गोपाल मारु को विश्वविद्यालय द्वारा अपूर्णा भेंट कर सम्मानित किया गया। गोष्ठी में रतनगढ के वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. हीरालाल सोनी, जिला पशु चिकित्सा चल इकाई के प्रभारी डॉ. पवन सहारण और कालूराम ने भी अपनी सेवाएं प्रदान कीं। डॉ. चेतन चौहान, मनीराम, सोहनदास आदि ने गोष्ठी को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। गांव के विद्यालय में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा पशुपालन की विभिन्न तकनीकों, फीडब्लॉक पशु आहार सहित उन्नत पशुपालन की एक प्रदर्शनी को भी ग्रामीणों ने बड़े उत्साह से देखा। कार्यक्रम का संचालन कुलदीप व्यास ने किया।

समन्वयक  
जनसम्पर्क प्रकोष्ठ